हमारे पूज्य हैं सभी देवता

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(राष्ट्रपति सम्मानित), प्रधान सम्पादक ''भारती''संस्कृत मासिक
पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान संस्कृत अकादमी
आधुनिक संस्कृत पीठ - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
सदस्य - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

भारतीय संस्कृति अनेक देवताओं की पूजा का विधान करने वाली संस्कृति है। यहाँ राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा आदि अनेक देवताओं की आराधना का सुदीर्घ इतिहास है। इसीलिए पाश्चात्य धर्मेतिहास विमर्शको ने इस पर बहुत विचार किया है कि क्या भारत बहुदेववादी है ? बहुदेववादी देशों की मान्यता को अंग्रेजी में पोलीथीइस्ट (Polytheist) कहा जाता है और एकेश्वरवादी को मोनोथीइस्ट (Monotheist)। अनेक देश एक ही ईश्वर या आराध्य को मानते हैं। हमारे यहाँ भी चाहे हम अपना एक आराध्य मान कर चलें किन्तु पूजा और आराधना अनेक देवताओं की बराबर की जाती है। इसे बहुदेववाद नहीं कहा गया। इसका नाम रखा गया हीनोथीइज्म (Henotheism) अर्थात् एकैकाधिदेववाद। इस सिद्धान्त में विभिन्न गुणों और मान्यताओं के लिए विभिन्न देवताओं की पूजा की परम्परा रहती है। इस विघ्नहरण के लिए गणेश की पूजा करते हैं, विद्या की प्राप्ति के लिए सरस्वती की, कल्याण के लिए शिव की। तभी तो पूरे देश में रामनवमी के दिन राम की पूजा की जाती है, जन्माष्टमी के दिन कृष्ण की, शिवरात्रि को शिव की, गणेश चतुर्थी को गणेश की। एकैकाधिदेव की यह मान्यता सदियों से हमारे देश की पहचान है।

एक ही देवता की पूजा और अन्यों की मान्यता को नकारने से अनेक संकट भी बहुधा उत्पन्न हो जाते हैं। किन्हीं काल खण्डों में कुछ धर्माचार्यों ने एक आराध्य के अलावा अन्य किसी को न मानने की 'अनन्य भक्ति का प्रचार अपने अनुयायिओं पर एकाधिकार प्राप्त करने की ललक से चाहे किया हो किन्तु अन्य देवताओं की मान्यता इस देश में कभी समाप्त नहीं हुई। ऐसी घटनाओं का इतिहास अवश्य मिलता है कि किसी कालखण्ड में दक्षिण भारत में शैवों और वैष्णवों में हिंसक संघर्ष हुआ, शाक्तों और अन्य अनुयायिओं में परस्पर कटुता फैलने का इतिहास भी मिलता है किन्तु ऐसी कटुताओं को निर्मूल करने के प्रयासों की परम्परा हमारे यहाँ अत्यन्त सुदृढ रही है। अनेक धर्मग्रन्थ, काव्य, उपदेश पुस्तकें इस प्रकार का पावन सन्देश देती आज भी पहचानी जा सकती हैं जिनमें विभिन्न देवताओं में

समान श्रद्धा का उपदेश हो, देवताओं में सामञ्जस्य के सिद्धान्त प्रतिष्ठापित किए गए हों।

यह तथ्य तो सुविदित ही है कि शैवों और वैष्णवों में संघर्ष समाप्त कर समरसता स्थापित करने का जो कार्य सन्त तुलसीदास के रामचरितमानस ने किया उसके बाद शैवों और वैष्णवों में कटुता को कोई घटना नहीं पाई गई। सन्त तुलसीदास ने शिव को राम का भक्त बताया, शिवजी ने पार्वती को रामकथा किस प्रकार कही इसका वर्णन किया।

राम के द्वारा शिव की प्रतिष्ठा (रामेश्वरम्) का विवरण दिया। रामचरितमानस सदियों से इस देश की अन्तरात्मा को जिस प्रकार विभोर करता रहा है उसका एक प्रमुख कारण सामञ्जस्य की यह संजीवनी ही तो है। इसी प्रकार की एक अमर पौराणिक संजीवनी है मार्कण्डेय पुराण में समाविष्ट तेरह अध्यायों की देवीगाथा 'दुर्गासप्तशती' जिसमें दुर्गा को समस्त देवताओं की तेजोराशि से उद्भूत अमर शक्ति बताया गया है। उसके विभिन्न अङ्ग विभिन्न देवों के तेज से बने, उसके विभिन्न शस्त्र विभिन्न देवताओं द्वारा समर्पित बताए गए। समस्त देवताओं की समन्वित शक्ति की निधान दुर्गा ने समस्त अनिष्ट दैत्यों का संहार किया और विभिन्न युगों में आप धर्म की स्थापना की।

विभिन्न आराध्य देवताओं में समन्वय और सामंजस्य का सन्देश हमारी संस्कृति में सर्वाधिक मान्यता प्राप्त सिद्धान्त रहा है। इस सन्देश को प्रसारित करने वाले ग्रन्थ इसीलिए सदियों से लोकप्रियता प्राप्त करते रहे हैं। इसी सन्दर्भ में मुझे याद आ रही है वह घटना जिसमें 6-7 दशक पूर्व विख्यात शाक्त सन्त स्वामी हरिहरानन्दनाथजी ने मुझे दुर्गासप्तशती के नियमित साप्ताहिक पाठ की सलाह दी थी जो मैंने प्रारम्भ किया और निरन्तर चालू रखा और फलदायी रहा। इसकी चर्चा मैंने प्रसिद्ध मासिक 'कल्याण' के कृपानुभूति विशेषाङ्क (2022) में एक लेख द्वारा की थी। इस लेख को पढ़कर बीसियों साधकों ने मुझसे फोन पर चर्चा की और मार्गदर्शन चाहा। तभी मुझे याद आया कि मैंने स्वामीजी से यही पूछा था कि हम वैष्णव परिवार के सदस्य हैं, श्रीमद् भागवत के भक्त हैं जिसकी भाषा, शैली और काव्यगरिमा का कोई सानी नहीं है, अन्य अनेक मन्त्र और स्तोत्र हमें याद हैं फिर सप्तशती ही क्यों? इस पर उन्होंने यही बताया था कि सप्तशती में समस्त देवताओं की मान्यता निबद्ध है। सभी देवों का उल्लेख है। द्वापर के अन्त में अवतीर्ण श्री कृष्ण तक का नाम दो जगह अंकित है। उससे सभी देवों की समान कृपा प्राप्त हो जाती है। अन्य स्तोत्र और मन्त्र सभी वन्दनीय और मान्य हैं, उन सबका समान आदर सप्तशती में उपदिष्ट है।

इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति की आधारभूत मान्यता विभिन्न देवताओं के प्रति श्रद्धा और सभी में सामंजस्य देखने की प्रवृत्ति मानी जानी चाहिए। भारत के विभिन्न अंचलों में अपनी - अपनी धार्मिक परम्पराओं के अनुसरण में लगे भारतीयों के मानस मे ंअन्य सम्प्रदायों, परम्पराओं और मान्यताओं के प्रति जो सामंजस्य भाव है वह सदियों से इस देश के सांस्कृतिक इतिहास की अक्षय निधि है।